E-LECTURE

UNIT 5

HISTORY OF INDIA (650-1206 A.D.)

Dr. NANDANI PATHAK

SOS ARCHAEOLOGY DEPARTMENT

18.04.2020

द्वारसमुद्र के होयसल

होयसल यादवों की एक शाखा थे जो अपने को चन्द्रवंशी मानते थे। वे गणवाडि के पश्चिम में चालुक्य नरेशों के सामन्त के रूप में शासन करते थे। उनका राज्य चालुक्य तथा चोल साम्राज्यों के बीच एक मध्यस्थ राज्य था। चालुक्य नरेश सोमेश्वर तृतीय के समय में इस वंश के विष्णुवर्द्धन ने अपने को स्वतन्त्र कर दिया। वह एक महत्वाकांक्षी शासक था और उसने चालुक्य राज्यों को जीत कर अपनी शाक्ति का विस्तार प्रारम्भ कर दिया। 1149 ई0 तक उसने धरवार के बंकापुर में अपने को सुदृढ़ कर लिया तथा अपनी राजधानी द्वारसमुद्र को अपने पुत्र की अधीनता मे छोड़ दिया। प्रारम्भ में वह जेन मतानुयायी था परन्तु बाद में रामानुज के प्रभाव से वैष्णव हो गया। उसके बाद उसका पुत्र नरसिंह राजा बना। उसके समय में कलचुरि सरदार बिज्जल ने उस पर आक्रमण किया तथा बनवासी को उससे छीनकर अपने अधिकार में कर लिया। नरसिंह ने 1173 ई० तक शासन किया।

नरसिंह के पश्चात् उसका पुत्र वीर बल्लाल द्वितीय (1173-1211 ई0) राजा बना। उसने होयसल राज्य का आगे विस्तार किया। उसका चालुक्य शासकों से भी युद्ध हुआ। वस्तुतः उसी के काल में होयसल चालुक्यों की अधीनता से अपने को पूर्णतया मुक्त कर सके। 1190 ई० में बल्लाल ने चालुक्य नरेश सोमेश्वर चतुर्थ तथा उसके सेनापति ब्रह्म को अन्तिम रूप से परास्त किया जिससे चालुक्यशक्ति का विनाश हो गया। तत्पश्चात् बल्लाल के यादव भिल्लम के साथ कई युद्ध हुये। अन्ततः 1191

ई0 में उसने गडम के निकट भिल्लम को पराजित किया तथा कृष्णा नदी तक के भूभाग पर अपना अधिकार कर लिया। परन्तु 1210 ई० में यादव वंश के सिंघन ने पुनः बल्लाल को पराजित कर उन प्रदेशो पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

बल्लाल द्वितीय के बाद नरसिंह द्वितीय, सोमेश्वर तथा नरसिंह तृतीय ने 1211 ई0 से 1286 ई0 तक बारी-बारी से शासन किया। उनका मदुरा के पाण्ड्य वंश के साथ युद्ध होता रहा। होयसल कुल का अन्तिम शासक नरसिह तृतीय का पुत्र वीर बल्लाल तृतीय (1310-1339 ई०) था। उसके शासन-काल (1310-11 ई0) मैं अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफूर ने होयसल राज्य पर आक्रमण किया। वीर बल्लाल पराजित हुआ तथा उसने अलाउद्दीन को वार्षिक कर देना स्वीकार कर लिया। उसने मलिक काफर को अतल सम्पत्ति उपहार में दिया। वीर बल्लाल 1339 ई0 तक अलाउद्दीन के करद के रूप में शासन करता रहा। इसके नाट होयसलों की स्वतन्त्रता का अन्त हो गया।

होयसल राजाओं का काल कला एवं स्थापत्य की उन्नति के लिए विख्यात है। उनके काल में मन्दिर निर्माण की एक नई शैली का विकास हुआ। इन मन्दिरों का निर्माण भवन के समान ऊँचे ठोस चबूतरे पर किया जाता था। चबूतरों तथा दीवारों पर हाथियों, अश्वारोहियों, हंसों, राक्षसो तथा पौराणिक कथाओं से संबन्धित अनेक मूर्तियाँ बनाई गयी हैं। उनके द्वारा बनवाये गये सुन्दर मन्दिरों के कई उदाहरण आज भी हलेबिड, बेलूर तथा श्रवणबेलगोला में प्राप्त होते हैं। होयसलों की राजधानी द्वारसमुद्र का आधुनिक नाम हलेबिड है जो इस समय कर्नाटक राज्य में स्थित है। वहाँ के वर्तमान मन्दिरों में होयसलेश्वर का प्राचीन मन्दिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है जिसका निर्माण विष्णुवर्द्धन के शासन-काल में हुआ। यह 160 फुट लम्बा तथा 122 फुट चौड़ा है। इसमें शिखर नहीं मिलता। इसकी दीवारों पर अद्‌भुत मूर्तियाँ बनी हुई हैं जिनमें देवताओं, मनुष्यों एवं पशु-पक्षियों आदि सबकी मूर्तियाँ हैं। विष्णुवर्द्धन ने 1117 ई० में बेलूर में 'चेन्नाकेशव मन्दिर' का भी निर्माण करवाया था। वह 178 फुट लम्बा तथा 156 फुट चौड़ा है। मन्दिर के चारों ओर वेष्टिनी (Railing) है जिसमें तीन तोरण बने हैं। तोरण-द्वारों पर रामायण तथा महाभारत से लिये गये अनेक सुन्दर दृश्यों का अंकन हुआ है। मन्दिर के भीतर भी कई मूर्तियाँ बनी हुई हैं। इनमें सरस्वती देवी, का नृत्य मुद्रा में बना मूर्ति-चित्र सर्वाधिक सुन्दर एवं चित्ताकर्षक है। होयसल मन्दिर अपनी निर्माण-शैली, आकार-प्रकार एवं सुदृढ़ता के लिए प्रसिद्ध है।